International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

महेंद्र भीष्म द्वारा रचित किन्नर उपन्यास में व्यक्त संवेदना

डॉ. ड़ी. मोहिनी

पोस्ट डॉक्टोरल फेलो, रमादेवी महिला विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर,ओड़िशा,751022

सारांश

समाज में विभिन्न वर्ग, वर्ण के लोगों का वास है। उसी प्रकार स्त्री, पुरुष भी हैं, और कुछ शारीरिक तौर से विकलांग भी हैं। विकलांगों में किसी को दिखाई नहीं देता, किसी को सुनाई नहीं देता, कोई बोल नहीं सकता आदि कई प्रकार के होते हैं, उन्हीं में से लैंगिक विकृति के भी लोग हैं। जब हम एक अंधे को देखते हैं तो उसके प्रति हमारी दया भाव उमड़ पड़ती है पर जब हम एक लैंगिक विकृति वाले इंसान को देखते हैं तो हमारी सोच बदल जाती है। उसे हम समाज से भिन्न समझते हैं। घृणा भाव तो कोई उन्हें घिनौनी दृष्टि से देखते हैं। पर उन्हें समाज का अंश नहीं समझा जाता। स्त्री और पुरुष दोनों ही गुण एकत्र मिलने पर उसे किन्नर या उभय लिंगी कहा जाता है। एक किन्नर को उनके समुदाय में सम्मिलित होने के लिए किसी योग्यता की आवश्यकता नहीं पड़ती बच्चे का उभय लिंगी जन्म होते ही किन्नर समुदाय में प्रविष्ट होने योग्य बन जाता है। किन्नर समुदाय की स्तिथि को अगर देखा जाए तो जब से मानव का जन्म हुआ तब से किन्नर समुदाय का भी जन्म हुआ है। समुदाय ने समाज में अपना स्वतंत्र पहचान बनाया है। समाज के बर्बर अत्याचारों को सहकर जीवन निर्वाह करता आया है। किन्नर समुदाय को विभिन्न नामों से जाना जाता है, जैसे कि किन्नर, हिजड़ा, छक्का, खोजा, नपुंसक, शिवशक्ति आदि। विदेशों में भी ट्रांसजेंडर समुदाय का अलग-अलग नाम हैं। दक्षिण ऐसिया में कोथी, हिजड़ा, जगोप्पा, शिखंडी आदि नमों से पुकार जाता है। दक्षिण अमेरिका में त्रावेस्ती कहते हैं तथा फिलीपींस में ट्रांसजेंडरों को बकला कहा जाता है।

यह समुदाय समाज में एकांत रहता है तथा जब कहीं जन्म, विवाह आदि मांगलिक कार्य होते हैं तब समाज में अपनी उपस्थिति को जाहिर करते हैं। राहुल सांकृत्यायन ने समुदाय की स्थिति पर अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा- “इस समुदाय का अपना एक संगठित समाज है वह कश्मीर से कन्याकुमारी एवं गुजरात से लेकर बिहार तक फैला हुआ है। पुराणों में उल्लेख मिलता है कि किन्नर हिमालय राज्यों की पहाड़ियों पर

रहते हैं खासकर ये नेपाल और सिक्किम में फैले हुए हैं। पुराणों में यह उल्लेख मिलता है कि किन्नर हिमालय के क्षेत्रों में बसने वाली एक मनुष्य जाति का नाम जिसे किन्नर कहा जाता है। जिसका प्रधान केंद्र हेमकुट था। वर्तमान में किन्नर हिमालय में आधुनिक किन्नर प्रदेश के पहाड़ी लोगों को कहा जाता है जिसकी भाषा किन्नौरी, गलचा, लाहौली आदि बोली के परिवार की है। वर्तमान में इस समुदाय को हिजड़ा शब्द के रूप में संबोधित न कर के हिन्दी में इसे किन्नर नाम से संबोधित किया जाता है।"[1]

मूल शब्द : ट्रांसजेंडर हिस्ट्री , क्रोमोसोम , शल्यक्रिया , किन्नर

सुसान स्टाइकर 'ट्रांसजेंडर हिस्ट्री' में ट्रांसजेंडर जन्म होने का कारण बताते हैं कि -"स्त्री-पुरुष को अलग-अलग बनाने वाले (x) और (y) क्रोमोसोम कम या ज्यादा प्रभाव की वजह से ऐसा होता है। गर्भ धारण करते ही यह निश्चित हो जाता है कि ये लड़का है या लड़की (xx) क्रोमोसम होंगे तो लड़की (xy) क्रोमोसोम होंगे तो लड़का परंतु ऐसा होने से पहले छह हफ्ते(six week) लिंग का स्वरूप लड़का और लड़की दोनों में एक जैसा ही होता है। उसके बाद (y) क्रोमोसोम का (sry) नामक जिन होता है। जिससे जननेद्रियों का विकास होने लगता है। हर्मोन्स बनने की प्रक्रिया प्रारंभ होती है। पुरुष में हर्मोन्स एंड्रोजन बनता है उसमें टेस्टास्टरानें हार्मोन की अधिकता होती है।"[2] पुरुष में हार्मोन एंड्रोजन और टेस्टास्टरान का स्तर कम अधिक होने पर जन्मित शिशु में लैंगिक विकलांग होती है। उभय लिंगी के लक्षण मिश्रित होने पर समाज इन्हें अपने से अलग समझती है।

समाज के इसी यथार्थ को लेकर महेंद्र भीष्म अपने उपन्यासों में दिखाया है। लेखक ने कथा चरित्रों के जरिए मानवीय संवेदनाओं को उजागर किया साथ ही समाज में फैले अपसंस्कृती के गर्त में फँसते जाते जीवन मूल्यों का चित्र उभारा है। महेंद्र भीष्म द्वारा रचित उपन्यास 'किन्नर कथा' किन्नरों का वास्तविक करूण व्यथा को उजागर करता है। मुख्य पात्र सोना का जन्म राजा जगतसिंह सामंती परिवार के उच्च कुल में हुआ। दुर्भाग्य वश सोना अपनी बहन रूपा की तरह स्वस्थ न होकर किन्नर है। सोना की माँ उसकी असलियत छुपाने की बहुत प्रयास करती है परंतु राजा साहब को यह बात पता चल जाती है। वे अपने मान-मर्यादा को देख सोना को मारने का आदेश अपने दीवान पंचम सिंह को देते हैं-"और सुनो, ई कलंक सोना हाँ कल भुंसारे, मो अंधीयरे इंदौरा की डांग ले जाके मार डारो। काऊ हां कानोकान पतो न परो चाहिए।"[3] लेकिन पंचम सिंह उसे तारा किन्नर को सौंप देता है। फिर राजा साहब से झूठ बोल देता है कि वह मेर चुकी है। तारा किन्नर बड़े लाड़ प्यार से उस की परवरिश करती है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने एक किन्नर के जीवन को बड़े

मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। सोना की तरह तारा को भी अपने परिवार से दूर होना पड़ता है क्योंकि इतना प्रताड़ित होना पड़ा कि उसे स्वयं परिवार छोड़ने को बाध्य किया गया। सोना उर्फ चन्दा को तारा का भतीजा मनीष से प्रेम होता है जिससे उसके जीवन में परिवर्तन आता है। समाज हमेशा से ही किन्नरों को अलग करने का प्रयास करता आया है। मनीष जब चंदा से प्रेम करता है तो समाज उसका विरोध करता है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने किन्नरों की विभिन्न शाखाओं का भी उल्लेख किया है। असली नकली किन्नरों के संघर्षों को दिखाया है, कथा में तारा गुरु असली नकली संघर्ष में अपना जीवन गवाती है। तारा के बाद किन्नरों के डेरे की गुरु सोनिया बन जाती है। सोनिया को राजा साहब के तरफ से अपनी पुत्री रूपा के विवाह पर नाच गाने के कार्यक्रम हेतु बुलाबा आता है। सोना को भी वहाँ जाना पड़ता है। हवेली पहुँचते ही उसे सब कुछ याद आ जाती है, उसे देख रानी आभा सिंह भी तड़प उठती हैं। पंचम सिंह द्वारा राजा साहब को पता चलने पर भ पंचम सिंह को मरने दौड़ते हैं। कथा के अंत में रूपा की सास शोभना सिंह द्वारा सोना को कनाडा ले जाकर उसकी शल्यक्रिया इलाज कर उसे सम्पूर्ण रूप से स्त्री शरीर में परिवर्तित कर दिया जाता है। अंत में सोना का विवाह मनीष से क्या जाता है, जिसे सभी स्वीकृति देते हैं।

लेखक ने उपन्यास 'किन्नर कथा' में किन्नरों की व्यक्तिगत, सामाजिक जीवन, उनके कुलदेवी बहुचरा माता, कुथांडवार मंदिर का वर्णन साथ ही उनके आर्थिक परिस्थितियाँ, बेरोजगारी आदि को भली भाँती वर्णन किया है। 26 प्रकरणों में लिखित यह उपन्यास केवल तारा और सोना की कहानी नहीं बताता बल्कि समाज की सच्चाई उजागर करता है।

'मैं पायल' आत्मकथात्मक उपन्यास है। यह गुरु पायल सिंह के जीवन संघर्ष पर आधारित है। उपन्यासकार ने जुगनी उर्फ जुगनू जो वर्तमान में किन्नर गुरु पायल सिंह के रूप में परिचित है। बचपन बहुत ही कष्टदायक रहा, पिता और भाई राकेश के द्वारा शारीरिक और मानसिक प्रताड़ना सहन करना पड़ा। "जो हाथ लगता उसी से पीटना शुरू कर देते थे तब तक जब तक वह टूट न जाए या स्वयं थक हार कर नशे की झोंक में लड़खड़ा कर गिर न जाएँ"[4] रोज-रोज की संघर्षपूर्ण जीवन से मुक्ति पाने केलिए उसे घर छोड़कर जाना पड़ता है। रास्ते में भटकती भीख माँगती हुई फिरती है। कुछ दिन उपरांत उसे अप्सरा टॉकीज में नौकरी मिल जाती है। अपनी पहचान छुपाकर वह पुरुष वेश में दिन में काम करती है। लेकिन रात में स्त्री वेश धारण करती है क्योंकि हिजड़े खुद को स्त्री समझते हैं। समाज की मानसिकता यह है कि किन्नरों को समाज से अलग समझते हैं, घिनौनी नजर से देखते हैं। उन्हें आम इंसानों की तरह जीने नहीं दिया जाता। जिस कारण वे वेश्यावृत्ति को अपनाते हैं। चाहे स्वइच्छा से या जबरदस्ती। उन्हें बाध्य करने वाले समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति ही होते हैं। 'मैं पायल' उपन्यास में भी पायल के साथ बलत्कार का प्रयास करते हैं। पायल जब घर छोड़कर

रेल से जाती है तब उसका शिकार होती है। कानपुर में भी वही चौकीदार प्रमोद उसके साथ जबरदस्ती करने का प्रयास करता है। लखनऊ आने पर पायल कुछ अच्छे लोगों से भी मिलती है। लखनऊ में जागरण के दिन मंदिर परिसर में भजन संगीत होती है तो पायल भी उसमें नृत्य करती है, तभी उसे कुछ किन्नर पहचान लेते हैं और उसे गुरु भाई के पास ले जाते हैं। वहीं पायल रहने लगती है और आगे चलकर गुरु बनती है जो वर्तमान में गुरु पायल सिंह के नाम से परिचित है । उपन्यास में वर्णित पायल किन्नर की कथा समाज के प्रत्येक किन्नर के संघर्षों की गाथा है।

लेखक ने अपने उपन्यास में पुरुष की कुंठित मानसिकता का उजागर किया। माँ की वात्सल्य प्रेम और तड़प को दिखाया है। माँ किस प्रकार अपने बच्चे की रक्षा समाज से लड़कर करती है साथ ही उसकी असहायता का भी वर्णन किया है।

उपसंहार-

मुख्य बात यह है कि दैहिक विसंगति का होना प्राकृतिक है। तथ्यों को जाने बिना समाज लैंगिक विकृति को नफरत की दृष्टि से देखती है। असल में परिवार और समाज का भय किन्नर बचपन से ही करते हैं। उनकी मानसिक स्थिति पूर्ण रूप से बिगड़ जाती है। भारत में किन्नरों को अनेक कष्ट सहन करना पड़ता है, उन्हें परिवार का साथ नहीं मिलता शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा जैसी सुविधाओं से वंचित रखा जाता है। महेंद्र भीष्म उपन्यास में किन्नरों के प्रति जो संवेदना की भवना जुड़ी है वह अन्यत्र देखने को नहीं मिलती। लेखक ने इस समुदाय के जीवन की पीड़ा को अपने साथ जोड़कर उनकी व्यथा को व्यक्त किया। उपन्यास की कथाओं का अनुशीलन करने पर यह जान पड़ता है कि वे केवल लेखन तक ही रुकना नहीं चाहते, उसे समाज में फैलाना चाहते हैं। किन्नर समुदाय को उनका हक्क दिलाना चाहते हैं जिससे वे समाज के अन्य वर्गों की तरह मान मर्यादा के साथ जीवन निर्वाह कर सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. राहुल सांकृत्यायन, किन्नर देश में, इलाहाबाद,पृ. 112, 113, 1948।
2. सुसान स्टाइकर, ट्रांसजेंडर हिस्ट्री, यूनाईटेट स्टेट ऑफ अमेरिका, पृ. 11, 2008 ।
3. महेंद्र भीष्म, किन्नर कथा, नई दिल्ली,पृ. 26, 2020 ।
4. महेंद्र भीष्म, मैं पायल,कानपुर,पृ. 22, 2020 ।